इकाई 15 1850 से सांस्कृतिक और बौद्धिक विकास

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 दार्शनिक विचार

15.3 सामाजिक विज्ञानों में विकास

15.4 विज्ञान में विकास

15.5 सारांश

15.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

15.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप इनके बारे में जानेंगे:

- बौद्धिक इतिहास में विकास;
- उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से बुद्धि को आकार देने में योगदान देने वाले दार्शनिकों के बारे में;
- सामाजिक परिवर्तन का विश्लेशण करने के लिए सामाजिक विज्ञान में नये विषयों का उद्‌भव; और
- वैज्ञानिक जिनकी खोजों ने वैज्ञानिक ज्ञान के नये सीमांत खोले।

15.1 प्रस्तावना

हमने उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान यूरोप में राजनैतिक विकास, औद्योगीकरण और शहरीकरण पर चर्चा की है। यह जानना दिलचस्प है कि उन्नीसवीं शताब्दी में प्रमुख बौद्धिक विकास भी हुए। राज्य व्यवस्था, समाज और अर्थव्यवस्था के विकास ने जीवन के लिए नई चुनौतियाँ पेश की और अपने विचारों के माध्यम से विविध क्षेत्रों के बुद्धिजीवियों ने समकालीन चुनौतियों पर अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ दी। प्रबोधन काल की विरासत ने नये आशावाद और व्यक्तिवाद को जन्म दिया। एक मध्यम वर्ग और पेशेवर समूह के विकास के साथ एक नयी जाँच-पड़ताल की भावना और मानव क्षमता की भावना भी आई। यह विश्वास इन नये विचारों में परिलक्षित होता था कि मनुष्य तर्क-संगत था और अपनी इच्छा के अनुसार चयन करने में सक्षम था। उन्नीसवीं सदी और प्रारंभिक बीसवीं सदी में दुनियाँ के बौद्धिक विकास में उन विचारों और अवधारणाओं का काफी हद तक वर्चस्व था, जिनकी जड़ें यूरोप में थी। इस अवधि को एक तरफ धार्मिक विश्वास और आत्मतत्वज्ञान और दूसरी ओर प्राकृतिक विज्ञानों के बीच टकराव के रुप में चितित किया जा सकता है। इतिहास, प्रगति, समाज के विकास और व्यक्तित्व पर नये विचारों ने बौद्धिक विकास की यात्रा को चिन्हित किया। इस इकाई में हम आपको पहले दार्शनिक विचारों से परिचित करायेंगे, फिर वैज्ञानिक ज्ञान में हुए विकास से और इससे भी कि समाज में परिवर्तन को समझने के लिए कैसे अध्ययन के नये विषयों का विकास हुआ।

15.2 दार्शनिक विचार

उन्नीसवीं शताब्दी यूरोप के बौद्धिक इतिहास में एक बहुत ही उत्पादक अवधि थी। इस अवधि में कुछ महान दार्शनिकों ने पिछली शताब्दियों के दार्शनिक विचारों को चुनौती दी जिसने आश्चर्यचकित कर दिया। यह वह अवधि थी जिसने वैज्ञानिक और सामाजिक क्रान्तियों के परिणामस्वरूप धार्मिक विश्वास को चुनौती दी। उन्नीसवीं शताब्दी के दार्शनिकों का प्रमुख सरोकार इमैनुएल कांट के आदर्शवाद और विरासत पर पुनर्विचार करना और आदर्शवाद का संशोधन या खंडन करके दार्शनिक विचार को नई दिशा देना था। आदर्शवाद ने विचार को प्रधानता दी और भौतिक पदार्थ को केवल द्वितीयक माना। कांट और हैगल दोनों ने आदर्शवादी दर्शन को नया अर्थ प्रदान किया। उनका मानना था कि विचार भौतिक जीवन को बदल सकते हैं लेकिन प्रत्यक्षवादी दार्शनिकों का मानना था कि भौतिक परिस्थितियों ने विचारों को निर्धारित किया। हम यूरोप में 1850 से कुछ प्रमुख विचारकों जैसे आर्थर शोपेनहॉवर (1788–1860), फ्रेडरिक नित्शे (1844–1900), थॉमस हिल ग्रीन (1836–1882), जॉर्ज सोरेल (1847–1922), और व्लादिमोर सोलोव्योव (1853–1900) के माध्यम से दार्शनिक विचार की नई धारा की व्याख्या करेंगे। हम यहाँ जॉन स्टुअर्ट मिल और कार्ल मार्क्स की चर्चा नहीं करेंगे क्योंकि हमने पहले की इकाइयों में उनके विचारों की चर्चा की है। इसके अलावा, आप सामाजिक विज्ञान के विकास पर ऑगस्ट कॉम्ते, हर्बर्ट स्पेन्सर और सीगमंड फ्रायड के बारे में भी जानेंगे।

आर्थर शोपेनहॉवर

शोपेनहॉवर उन्नीसवीं शताब्दी के प्रमुख दार्शनिकों में से एक थे। और उनकी सबसे महत्वपूर्ण रचना *द वर्ल्ड एज विल एन्ड रिप्रेजेन्टेशन* है। जर्मन आदर्शवाद के रूप में जन्में अपने लेखन के माध्यम से वह हेगेल द्वारा बनाई गई परंपरा का एक विकल्प प्रदान करना चाहते थे। उन्हें एक प्रकार के दार्शनिक निराशावाद की वकालत करने के लिए जाना जाता है, जो जीवन को अनिवार्य रूप से बुरा और निरर्थक मानते थे। उन्होंने सौन्दर्य शास्त्र और तपस्वी जीवन में आशा देखी। उनके दर्शन की व्याख्या प्लेटो और कांट के संश्लेशण और उपनिषद और बोध साहित्य के संश्लेषण के रूप में भी की गई है। अपनी रचना *द वर्ल्ड एज विल एन्ड रिप्रेजेन्टेशन* में शोपेनहॉवर सुझाते हैं कि विश्व को एक गहरे स्तर पर इच्छा शक्ति के रूप में देखा जाना चाहिए। हमारे कर्म इच्छा शक्ति से संचालित होते हैं और भावनाओं और इच्छाओं के उत्पाद होते हैं। हम दूसरों की कीमत पर जीवित रहने की इच्छा से प्रेरित हैं। मानव सार्वभौमिक टकराव, ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्वन्द्विता, विरोध और पीड़ा में जकड़ा हुआ है। शोपेनहॉवर के अनुसार, अस्थाई रूप से कला के माध्यम से वह इससे अस्थाई मुक्त हो सकता है। कला के माध्यम से कोई भी व्यक्ति अपने आस-पास की दुनिया के विस्तृत अस्तित्व को भूल सकता है लेकिन स्थाई राहत केवल हमारी इच्छाओं के उन्मूलन और उन सभी के त्याग से आ सकती है जिन्हें हम जीवन के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं। शोपेनहॉवर अनुभवजन्य दुनिया को एक भ्रम मानते थे। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त और बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दौर के लेखकों, कलाकारों और विचारकों जैसे टॉलस्टाय, तुर्गनेव, नित्शे, प्राऊस्ट और अन्य पर उनका काफी प्रभाव था। 'कभी-कभी यह पूछा जाता है कि क्या शोपेनहॉवर का दर्शन ''निराशावाद'' शीर्षक का हकदार हैः यह संभवतः उनके सुसंगत केन्द्रीय विचार से पैदा होता है कि प्रत्येक मनुष्य का वास्तविक सार, मानवता और विश्व का सार कुल मिलाकर केवल व्यथा है जिससे यदि संभव हो, तो हर कीमत पर बचना है'। (क्रिस्टीन गजेड़ल (ईडी), *डिबेट्स इन नाइनटिंनथ सेंचुरी यूरोपियन फिलॉसफी*, पृष्ठ, 146)।

फ्रेडरिक नित्शेः

शोपेनहॉवर के लेखन से प्रेरित, नित्शे का मानना था कि समकालीन सभ्यता का सच्चा संकट इसकी उन मूल्यों पर निर्भरता थी जो अपनी प्रासंगिकता खो चुके थे। उनका मानना था कि पश्चिमी संस्कृति में मूल्य प्रणाली ढह रही है, तर्कशक्ति और धर्म मूल्य के स्त्रोत के रूप में पर्याप्त नहीं है। सामंजस्य और प्रसन्नता के स्थान पर शक्ति प्राप्त करने के लिए लोग निरंतर टकराव में हैं। वह पश्चिमी तत्त्वमीमांसा और ईसाई धर्म से प्राप्त विचारधाराओं के आलोचक थे। उनके अनुसार ईश्वर की मृत्यु के साथ सभ्यता को एक नये विश्वास पर आधारित होने की आवश्यकता थी और उन्होंने आधुनिक सभ्यता की शून्यता को उजागर किया। साथ ही वह मानव की सम्भावनाओं में गहरा विश्वास रखते थे। अपनी रचना *दस स्पोक जरथुस्ट्रा* में उन्होंने 'सुपरमैन' के बारे में बात की, जो नये मूल्यों को बनाने की क्षमता रखते थे और जो पारंपरिक नैतिकता से संचालित नहीं होते हैं। 'सुपरमैन' में संघर्ष करने और स्वयं से परे किसी चीज के लिए प्रयास करने और जीने की क्षमता थी। उन्होंने सुझाव दिया कि मानव आत्मा के भीतर हमें आन्तरिक शक्ति की खोज करनी चाहिए। उन्होंने मनोवैज्ञानिक और संस्थागत बेड़ियों को तोड़ने की कोशिश की जिससे मानवीय पीड़ा पैदा हुई। उन्होंने एक नये युग के लिए एक नई नैतिकता निर्धारित की। उनका प्रमुख योगदान ज्ञान, विश्वास और मूल्यों की आत्मविषयक बुनियाद की अस्वीकृति में निहित है। उनकी सबसे महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं, *द बर्थ ऑफ ट्रेजिड़ी, दस स्पोक जरथुस्ट्रा, बियोंड गुड एंड इविल और टविलाइट्स ऑफ द आइडोल्स*। व्यक्तिगतता, नैतिकता और अस्तित्व के अर्थ पर नित्शे के विचारों ने बीसवीं सदी में मार्टिन हाइड़ेगर, जेक्स डेरिड़ा, मिशेल फूको जैसे अन्य दार्शनिकों की सोच को प्रभावित किया।

थॉमस हिल ग्रीन

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में और बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में आदर्शवाद ब्रिटिश दर्शन पर हावी था। टी. एच. ग्रीन, एडवर्ड केअर्ड, एफ.एच. ब्रेडले जैसे दार्शनिक आदर्शवादियों की इस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं और यहाँ ब्रिटिश आदर्शवाद का प्रतिनिधित्व करने वाले टी. एच. ग्रीन. के बारे में चर्चा करेंगे। ग्रीन की सबसे महत्वपूर्ण रचना *प्रोलेगोमेना टू एथिक्स* है जो नैतिकता के बारे में बात करती है। ग्रीन इस दृष्टिकोण से सहमत नहीं थे कि वास्तविकता मन का निर्माण है। उनका मानना था कि जिस दुनियाँ में हम रहते हैं वह हमारी बुद्धि में ही मौजूद है। उनकी राय में, 'वास्तविकता और वस्तुनिष्ठ की धारणाएँ चेतना के बिना निरर्थक हैं। एक वस्तुनिष्ठता विश्व और प्रकृति की एक व्यवस्था की कल्पना करने के लिए, एक समझ होनी चाहिए; वास्तविकता की संकल्पना के लिए एक संकल्पना करने वाले की आवश्यकता होती है ... वह वास्तविकता का वर्णन ''संबंधित प्रतीतियों की व्यवस्था'' के रूप में करते हैं। इस प्रकार इन संबंधों को समझने के लिए एक समझ की आवश्यकता होती है (बेजांमिन डी. क्रो (ईडी), *द नाइनटिंथ सेन्चूरी फिलासफी रीडर*, पृष्ठ, 191-192)। ग्रीन ने आत्म चेतना को परिभाषित करने में कठिनाई को स्वीकार किया, जिसे उन्होंने सभी ज्ञान और प्रकृति के केन्द्र में माना। ग्रीन इस विचार से सहमत नहीं थे कि नागरिक समाज अपनी स्वयं की प्रसन्नता या खुशी की तलाश करने वाले स्वार्थी व्यक्तियों का एक संग्रह है। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को समय से अलग नहीं किया जा सकता है और समाज के बिना व्यक्ति का कोई मूल्य नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति समाज का एक अभिन्न अंग है और दूसरों के हित की पारस्परिक मान्यता किसी भी समाज का नियम है। व्यक्ति समाज से अकेला नहीं है और इसीलिए उसे अपने हित आगे बढ़ाने का कोई अधिकार नहीं है। स्वतंत्रता पर अपने विचार को स्पष्ट करते हुए ग्रीन ने लिखाः

''हम शायद सभी सहमत होंगे कि स्वतंत्रता, सही रूप में समझी गई, सभी वरदानों में सबसे बड़ी है, कि इसकी प्राप्ति नागरिकों के रूप में हमारे सभी प्रयासों में सही है। लेकिन जब

हम इस प्रकार स्वतंत्रता की बात करते हैं, तो हमें ध्यान से विचार करना चाहिए कि इससे हमारा तात्पर्य क्या है। इससे हमारा अर्थ केवल संयम या विवशता से मुक्ति नहीं है। हमारे लिए स्वतंत्रता का अर्थ केवल यह नहीं है कि हम जैसा चाहें हम उसे पसंद करें। हमारा अर्थ ऐसी स्वतंत्रता नहीं है जिसका आनन्द एक आदमी या लोगों का समूह दूसरों की कीमत पर ले सकता है। जब हम स्वतंत्रता के बारे में बात करते हैं जो बहुत ही बहुमूल्य होती है तो हमारा अर्थ कुछ करने या आनन्द से कुछ करने में एक सकारात्मक शक्ति या क्षमता से होता है; कुछ ऐसा जिसे हम दूसरों के साथ साझा कर सकते हैं। हमारा मतलब है कि वह शक्ति जो मनुष्य अपने साथी या मित्र लोगों द्वारा दी गई मदद या सुरक्षा के माध्यम से प्रयोग करता है और बदले में वह जिन्हें सुरक्षित करने में मदद करता है''। (टी.एच. ग्रीन, *लेक्चर ऑन द प्रिंसीपल्स ऑफ पोलिटिकल ओबलिगेशन*) उनका मानना था कि व्यक्ति अन्य नागरिकों के साथ मिलकर स्वतंत्रता का आनन्द ले सकता है। स्वतंत्रता की कल्पना दबाव के अभाव और एक सकारात्मक शक्ति के विचार के रूप में की गई थी।

जोर्जेस सोरेल

जॉर्जेस सोरेल 1870 की फ्रांसीसी हार और 1871 में पेरिस कम्यून के गृहयुद्ध से बहुत प्रभावित थे। वह अपनी बौद्धिक यात्रा के किसी चरण में मार्क्सवादी दर्शन से प्रभावित थे, लेकिन वे एक अपरम्परागत मार्क्सवादी थे। वह किसी भी राजनीतिक दल में शामिल नहीं हुए क्योंकि उनका मानना था कि सभी दलों पर मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों का वर्चस्व था। उन्होंने बुर्जुआ संस्कृति की उपेक्षा की और मजदूर वर्ग की क्षमता पर भरोसा किया। अपनी दो सबसे प्रसिद्ध रचनाओं, *रिफ्लेक्शनस् ऑन वायलेंस* और *द इल्यूजन्स ऑफ प्रोग्रेस* में उन्होंने पूंजीपति वर्ग के लिए और बुर्जुआ मूल्यों के लिए अपनी नापसंदगी जाहिर की। उन्होंने मजदूर वर्ग के नेतृत्व में समाज के क्रांतिकारी परिवर्तन की वकालत की। उनके विचार में हिंसा, भावना और मिथक के माध्यम से समाज की अधोगति और नैतिक पतन को उखाड़ फेंकने की आवश्यकता थी। वह भविष्य में स्थापित किए जाने वाले समाज की प्रकृति की बजाए मौजूदा समाज के बदलाव की प्रक्रिया के बारे में अधिक सरोकार रखते थे। 'सोरेल ने स्वायत्त श्रमिकों के तहत उत्पादन के एक नये युग का पूर्वानुमान लगाया, और अपनी समाजवादी साख के बावजूद पूंजीवाद के प्रति उनका रवैया उतना शत्रुतापूर्व नहीं था जितना कि माना जा सकता है। वह निजी संपत्ति के खिलाफ नहीं थे बल्कि इसे व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के लिए एक आवश्यक सहायक के रूप में देखा। इसके अलावा, उन्होंने मुक्त बाजार में एक उत्साह और उद्यम के लिए एक प्रेरणा देखी और उनका रवैया सर्वदाता राज्य के प्रति अधिक शत्रुतापूर्ण था। वह मजदूरों के शोषक के रूप में पूंजीपतियों, के विरोधी थे, लेकिन साहसिक उद्यमी के रूप में नहीं (इयान एडमास एन्ड आर डब्ल्यू डाइसन, *फिफ्टी मेजर पोलिटिकल थिकंर्स*, पृष्ठ 157)।

व्लादीमीर सोलोव्योव

व्लादीमीर सोलोव्योव एक प्रभावशाली विचारक थे और रूसी दर्शन के संस्थापक माने जाते हैं। दोस्तोवस्की और टॉलस्टॉय के साथ मिलकर सोलोव्योव ने बीसवीं शताब्दी के रूसी चिंतन के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। रुढ़िवादी धर्मशास्त्र के आधार पर उन्होंने मानव अस्तित्व के आवश्यक प्रश्नों से निबटा। उन्होंने एक ईसाई विश्व दृष्टि से बुराई की केन्द्रीय समस्या पर चर्चा की। वह मानवीय स्वायत्तता और गरिमा में विश्वास करते थे। यद्यपि ईश्वर में आस्था रखते हुए उन्होंने निरपेक्ष मानवीय मूल्य और मानवीय देवत्व पर जोर दिया। उनके मत में दैवीय सिद्धान्त अपने आप में मानवीय गरिमा का स्त्रोत नहीं है, यह आन्तरिक दैवीय क्षमता का आत्म बोध है जो मानव गरिमा के मूल में है; इसलिए, उन्होंने सुझाव दिया कि मानवीय गरिमा का स्रोत ईश्वर नहीं है, बल्कि 'ईश्वरीय मानवता'' है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मानवीय स्वायत्तता को दैवीय सिद्धान्त की छाया

में नहीं रखा जाना चाहिए। उन्होंने धर्म में चमत्कार, रहस्योद्‌घाटन और हठधर्मिता को महत्व नहीं दिया। *द जस्टीफिकेशन ऑफ द गुड*, सोलोव्योव की प्रमुख रचनाओं में से एक, ईश्वरीय अच्छाई में भागीदारी के आधार पर मानव नैतिकता के लिए तर्क प्रदान करती है। उन्होंने 'राष्ट्रवाद, युद्ध, अर्थशास्त्र, कानूनी न्याय और परिवार जैसे क्षेत्रों के लिए ईसाई अच्छाई के व्यवहारिक निहितार्थों के बारे में बात की।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में यूरोप के कुछ प्रमुख विचारकों की उपरोक्त संक्षिप्त चर्चा के माध्यम से हमने आपको यूरोपीय दर्शन के उन विकासों से परिचित कराने का प्रयास किया है, जिनका पश्चिमी दर्शन के उत्तरवर्ती विकास पर प्रभाव था।

बोध प्रश्न 1

1) आर्थर शोपेनहॉवर और फ्रेडरिक नित्शे द्वारा दिये गए योगदान के बारे में संक्षेप में लिखिए।

....

....

....

....

....

....

2. जॉर्जेस सोरेल और व्लादीमीर सोलोव्योव के दार्शनिक विचारों के बारे में चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

....

15.3 सामाजिक विज्ञानों में विकास

प्रबोधन काल में बौद्विक विकास के बाद एक शैक्षिक अनुशासन के रूप में सामाजिक विज्ञान विकसित हुआ। एडम स्मिथ, वॉल्तेयर, रूसो, इमनूअल कॉंट, डेविड हयूम आदि जैसे महान बुद्धिजीवियों ने यूरोप का सामाजिक विज्ञान का अध्ययन करने के लिए नींव रखने में योगदान दिया। अठारहवीं शताब्दी के यूरोप की दार्शनिक परंपरा ने सामाजिक विज्ञान के विकास की नींव रखी। राजनैतिक दार्शनिक राज्य के विकास और इसकी प्रकृति और शक्तियों से संबंधित समस्याओं को समझने और उनका विश्लेशण करने में लगे हुए थे। वस्तुओं के उत्पादन और वितरण से संबंधित समस्याओं का अध्ययन और आर्थिक विकास ने एक स्वतन्त्र अनुशासन के रूप में अर्थशास्त्र के उद्‌भव के लिए योगदान दिया। इसी तरीके से समाज और मानव विकास के विविध क्षेत्रों से जुड़े विषयों ने इतिहास, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, मानव विज्ञान आदि विभिन्न सामाजिक विज्ञानों को जन्म दिया। उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान यूरोप में राजनैतिक क्रांतियों की एक श्रृंखला, औद्योगिक क्रांति के बाद पूंजीवाद का उदय, नये सामाजिक वर्गों और संस्कृति का उदय, उदारवाद, समाजवाद,

राष्ट्रवाद और राष्ट्र-राज्य जैसे नये विचारों का विकास और यूरोपीय शक्तियों के विस्तार से उपनिवेशवाद के जन्म जैसी घटनाएँ हुई। इन विकासों के प्रतिक्रियास्वरूप, विभिन्न दृष्टिकोणों से राज्य और समाज के परिवर्तन में सम्मिलित प्रक्रियाओं का अध्ययन करने के लिए बुद्धिजीवियों के बीच रुचि विकसित हुई। इन पहलों के परिणामस्वरूप वैज्ञानिक अध्ययनों ने सामाजिक विज्ञान के अनुशासनों को जन्म दिया। इस भाग में हम सामाजिक विज्ञानों के विकास की इस प्रक्रिया में कुछ विचारकों के योगदान पर चर्चा करेंगे।

इतिहास और लियोपॉल्ड फॉन रांके

उन्नीसवीं सदी के जर्मनी इतिहासकार रांके को आधुनिक व्यवसायिक इतिहास लेखन के शिक्षक के रूप में याद किया जाता है। उन्होंने एक कार्य-प्रणाली प्रदान की जो वर्णनात्मक इतिहास और अतीत के वर्णन के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को जोड़ती है। वह इतिहास लेखन में परंपरा पर निर्भरता के आलोचक थे और उन्होंने अधिक वस्तुनिष्ठ पद्धति सुझाई। इतिहास लेखन में उनका दृष्टिकोण इतिहासवाद के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अभिलेखीय स्रोतों का उपयोग करते हुए अनुभवजन्य सबूतों के आधार पर तथ्यों की प्रस्तुति पर जोर दिया। दस्तावेजों के प्रत्यक्ष विश्लेषण करने के रांके के आग्रह ने इतिहासलेखन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास में योगदान दिया। उन्होंने लेखन में व्यवस्थित और स्रोत आधारित आलोचनात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहन दिया। इतिहासकार अपने स्रोतों का चयन कैसे और क्यों करता है? दस्तावेजों की वैधता क्या है? क्या व्यक्तिगत पूर्वाग्रह इतिहासकार की खोज, चयन और प्रस्तुति को प्रभावित करते हैं? ये मुद्दे रांके द्वारा उठाए गये जिसके उत्तर उन्होंने दिए। इतिहास लेखन के उनके शिल्प को इतिहासवाद के रूप में जाना जाता है जिसमें यह विश्वास है कि इतिहास का अध्ययन अपने आप में एक लक्ष्य है। उन्होंने स्रोतों की खोज, तथ्यों का आलोचनात्मक मूल्यांकन और संगोष्ठी के विकास के माध्यम से इतिहास लेखन की कला का निर्माण किया। इतिहास को किसी नैतिक मानक के अधीन नहीं किया जाना चाहिए। रांके को वस्तुनिष्ठ इतिहास लेखन को शुरू करने का श्रेय दिया जाता है जिसने आधुनिक इतिहास लेखन के विकास को शानदार तरीके से प्रभावित किया।

मानव विज्ञान और एडवर्ड बर्नेट टेलर

आधुनिक मानव-विज्ञान जैविक और सांस्कृतिक विकास के वैज्ञानिक सिद्धान्तों के विकास के साथ उन्नीसवीं शताब्दी में अस्तित्व में आया। औपनिवेशिक देशों में अपने साम्राज्य के विस्तार के साथ यूरोपीय देशों को नये लोगों और नई संस्कृतियों का सामना करना पड़ा। वे औपनिवेशिक लोगों पर अपने प्रभुत्व के लिए वैज्ञानिक स्पष्टीकरण और औचित्य की भी तलाश कर रहे थे। इसके अलावा औपनिवेशिक लोगों की नई संस्कृतियों में उनकी रुचि ने व्यवसायिक मानव-विज्ञान के विकास को प्रोत्साहन प्रदान किया। मानवविज्ञानियों ने जैविक सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के मॉडल विकसित किये। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में ब्रिटिश मानव-विज्ञान के संस्थापक एडवर्ड बर्नेट टेलर ने सांस्कृतिक विकास के सिद्धांतों को बढ़ावा दिया। मानव-विज्ञान से संबंधित शोध के लिए टेलर ने बड़े पैमाने पर यात्राएँ की। उन्हें मुख्य रूप से दो प्रमुख रचनाओं, *प्रिमिटिव कल्चरः रिसर्चेज इनटु द डेवलपमेन्ट ऑफ माइथोलोजी, फिलॉसाफी, रीलिजन, आर्ट एन्ड कस्टम और एंथ्रोपोलॉजीः एन इन्ट्रोडक्शन टु द स्टडी ऑफ मेन एन्ड सिविलाइजेशन* के लिए मुख्य रूप से याद किया जाता है। उन्होंने कई संस्कृतियों में पाऐ जाने वाले विशिष्ट रीति-रिवाजों और विश्वासों के विकास का विश्लेषण किया। उन्हें संस्कृति की पहली मानवशास्त्रीय परिभाषा और जीवात्मवाद की अवधारणा देने का श्रेय दिया जाता है। *प्रिमिटिव कल्चर* में टेलर ने 'संस्कृति या सभ्यता' को 'उस नैतिकता, कानून, रीति-रिवाज के रूप में परिभाषित किया जिसमें मनुष्य द्वारा समाज के सदस्य के रूप में अर्जित की गई कोई अन्य क्षमताएँ या

आदतें सम्मिलित हैं'। जीवात्मवाद की अवधारणा के माध्यम से उन्होंने पौराणिक कथाओं के साथ-साथ आदिम समाज की अन्य सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का विश्लेषण किया। जीवात्मवाद इस विश्वास पर आधारित है कि अनेक वस्तुओं या घटनाओं में जीवन है। उन्होंने सुझाव दिया कि विभिन्न देशों में सामाजिक विकास के अंतर के बावजूद मानव मन और उसकी क्षमताएँ प्रत्येक देश में समान हैं। हालाँकि, यह शिक्षा है जो अंतर पैदा करती है। उनके मत में सांस्कृतिक मानवविज्ञानी का कार्य विकास या विकास के चरणों की खोज करना है। उन्होंने जादू या धर्म की उत्पत्ति के बारे में सिद्धान्तों को विकसित किया। उन्होंने तर्क दिया कि चीजों में विद्यमान आत्मा में विश्वास करने वाला जीवात्मवाद ही सच्चा प्राकृतिक धर्म है।

सोशयोलोजी एन्ड ऑगस्ट कॉम्ते

अनुशासन के रूप में समाजशास्त्र का उद्‌भव उन परिवर्तनों का परिणाम है जिनका मुख्य से औद्योगिकरण और शहरीकरण के परिणामस्वरूप यूरोप ने अनुभव किया। आगस्ट कॉम्ते को समाज को समझने के लिए एक नये अनुशासन को समझने के लिए समाजशास्त्र के संस्थापक के रूप में श्रेय दिया जाता है। तब से हर्बर्ट स्पेन्सर, एमिल दुर्खाइम और मैक्स वेबर जैसे अनेक विद्वानों ने समाजशास्त्र के विकास में योगदान दिया है। कॉम्ते के राजनैतिक दर्शन को प्रत्यक्षवादी दर्शन के रूप में जाना जाता है जो मानव मन की प्रगति के उनके ऐतिहासिक अध्ययन से निकला है। कॉम्ते ने अपनी प्रधान कृति *कोर्स ऑफ पोजिटिव फिलॉसफी* को छः खंडों में विकसित किया। उनका केन्द्रीय सवाल यह विश्लेषण करने का था कि समाज कैसे विकसित होते हैं और कैसे बदलते हैं। उन्होंने निर्धारित किया कि व्यक्तिगत बुद्धि और मानव समाज ऐतिहासिक विकास के क्रमिक चरणों के माध्यम से प्रगति करते हैं। उनके अनुसार 'हमारे ज्ञान की प्रत्येक शाखा तीन अलग-अलग सैद्धान्तिक स्थितियों से गुजरती है: धर्मशास्त्रीय या काल्पनिक; तत्वमीमांसा या अमूर्त और वैज्ञानिक या प्रत्यक्षवादी।' इसको उन्होंने तीन चरण के सिद्धान्त के रूप में पेश किया। धर्मशास्त्रीय चरण मानव के अन्धविश्वासी स्वभाव का प्रतिनिधित्व करता है, तत्वमीमांसा या आत्मविषयक चरण जिसमें मानवता अपने अन्धविश्वासी स्वभाव से बाहर आने लगती है और अन्तिम् चरण जब मानव महसूस करता है कि प्राकृतिक घटनाओं और विश्व को वैज्ञानिक तरीके से समझाया जा सकता है। दुनियाँ को समझने के लिए चितंन तर्क-शक्ति और तर्कशास्त्र के बढ़ते अनुप्रयोग ने मानव बुद्धि के विकास के अन्तिम चरण को चिन्हित किया। उन्होंने सुझाव दिया कि समाज के अपने नियम होते हैं, जिनके तहत् यह भौतिक दुनियाँ की तरह संचालित होता है। उनका मानना था कि जिस प्रकार से मानव बुद्धि चरणों के माध्यम से विकसित हुई थी, सामाजिक व्यवस्था और सामाजिक संगठन ने भी विकास के समान चरणों का पालन किया। प्रगति के इन नियमों के बारे में धीरे-धीरे समझ में आना, कॉम्ते के अनुसार प्रगति शब्द का अर्थ है। अपनी रचना *रिलिजन ऑफ हयूमिनिटी* में उन्होंने तर्क शक्ति और मानवता के आधार पर एक बेहतर धार्मिक व्यवस्था के विचार को विकसित किया। फ्रांसीसी समाजशास्त्री रेमंड ऐरन के अनुसार, 'ऑगस्ट कॉम्ते को मानव और सामाजिक एकता का पहला और महत्वपूर्ण समाजशास्त्री माना जा सकता है।' उनके विचारों ने संरचनात्मक कार्यवाद विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मनोविज्ञान और विल्हेम वुण्ट

मानसिक जीवन का वैज्ञानिक रूप से विश्लेषण करने के लिए मनोविज्ञान एक अनुशासन के रूप में विकसित हुआ। विल्हेम वुण्ट को मनोविज्ञान को एक वैज्ञानिक अनुशासन के संस्थापक के रूप में याद किया जाता है। उन्होंने अपना केरियर एक शरीर-क्रिया विज्ञानी के रूप में शुरू किया और फिर मानसिक चेतना का अध्ययन करने के लिए एक अलग अनुशासन के रूप में मनोविज्ञान को विकसित किया। उन्होंने मनोविज्ञान को दर्शन और

जीवविज्ञान से अलग कर दिया। मनोवैज्ञानिक प्रश्नों को समझने के लिए भौतिक विज्ञान में प्रयोग की जाने वाली प्रायोगिक और अनुसंधान पद्धति को लागू किया गया। अपनी प्रथम प्रमुख रचना *प्रिंसिपलस ऑफ फिजोयोलोजिकल साइकोलोजी* में उन्होंने मनोविज्ञान में प्राकृतिक विज्ञान की पद्धतियों के उपयोग के बारे में स्पष्ट किया। उन्होंने मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का परीक्षण करने के लिए विस्तृत प्रयोगों के माध्यम से मनोविज्ञान में वैज्ञानिक पद्धति को लागू करने पर जोर दिया। उन्होंने लिपजिग विश्वविद्यालय में प्रयोगात्मक मनोविज्ञान की पहली प्रयोगशाला स्थापित की। उन्होंने चिंतन की संरचनाओं को समझने और चिंतन के पारस्परिक प्रभाव की जाँच-पड़ताल करने के लिए प्रयोगात्मक तरीकों का इस्तेमाल किया। उन्होंने प्रतिभागियों द्वारा वस्तुओं, चित्रों और घटनाओं के अवलोकन के माध्यम से संवेदना और अनुभूति का अध्ययन किया। उन्होंने मानसिक अवस्थाओं का अध्ययन करने के लिए आत्म-परीक्षण नामक प्रक्रिया विकसित की और मानसिक प्रक्रियाओं को समझने के उनके दृष्टिकोण को संरचनावाद के नाम से जाना जाता है। उन्हें मनोविज्ञान के अध्ययन में तीन महत्वपूर्ण विचारों के योगदान के लिए याद किया जाता है - एक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का विचार, एक सामाजिक मनोविज्ञान का विचार और एक वैज्ञानिक तत्वमीमांसा का विचार।

15.4 विज्ञान में विकास

उन्नीसवीं शताब्दी विज्ञान की खोजों का काल था। हम देख चुके हैं कि दार्शनिक और सामाजिक वैज्ञानिक नये दृष्टिकोण से कैसे मानव प्रकृति और व्यवहार को समझने में लगे थे। उसी समय वैज्ञानिक भौतिक विश्व के रहस्यों को खोजने की कोशिश कर रहे थे। विलियम वीवैल ने विज्ञान के इतिहास और दर्शन पर बड़े पैमाने पर लिखा और विज्ञान का अध्ययन करने वाले लोगों का वर्णन करने के लिए सबसे पहले वैज्ञानिक शब्द का इस्तेमाल किया। उन्होंने वास्तुकला, खगोल विज्ञान, भू-विज्ञान, गणित और भौतिकी जैसे विषयों पर लिखा। विज्ञान के इतिहास और दर्शन पर उनकी प्रमुख रचना *हिस्ट्री ऑफ इन्डकटिव साइंसिसः फरोम द अरलिएस्ट टु द प्रेजेंट टाइम*, तीन खंडों मे हैं। वीवैल के अनुसार विज्ञान मानवीय मस्तिष्क की एक एतिहासिक गतिविधि थी और वैज्ञानिक परिणाम अस्थाई है और समय के साथ बदल सकते हैं। उन्होंने तर्क दिया कि विज्ञान के व्यक्तिपरक मानवीय आयाम को वस्तुनिष्ठ आयाम से अलग नहीं किया जा सकता, और हर कोई पूर्णधारणाओं के साथ काम करता है। वैज्ञानिक तर्क के लिए एक सामाजिक और ऐतिहासिक तर्क है और सत्य के लिए वैज्ञानिकों को अपने दावों से सावधान रहने की आवश्यकता है।

चार्ल्स रॉबर्ट डार्विन वीवैल के समकालीन थे और डार्विन की चिर-स्मरणीय रचना *द ओरिजिन ऑफ स्पीसिज* ने विकास की प्रक्रिया का दस्तावेजीकरण किया और जीवन को स्पष्ट करने के लिए संदर्भ का ढांचा बदल दिया। बाद में उनके विकास के सिद्धांत ''सामाजिक डार्विनवाद'' के नाम से जाना जाता है। और इसके गंभीर नकारात्मक प्रभाव भी थे। उनका सिद्धांत नस्लवादी नहीं था लेकिन दुर्भाग्य से यह नरसंहार और नस्लवाद को सही ठहराने के लिए इस्तेमाल किया गया था। डार्विन ने प्रकृति को अस्तित्व के लिए संघर्ष के रूप में देखा। उन्होंने समय के साथ प्रजातियों के परिवर्तन की प्रक्रियाओं को समझने के लिए ब्राजील, अर्जेन्टीना, चिली और दक्षिण अमेरिका के कुछ छोटे द्वीपों में पौधों और जानवरों, चट्टानों और जीवाष्मों के नमूने एकत्र करने के लिए छानबीन की। उनके प्रयोगों के परिणाम बाद में उनकी रचना *ऑन दी ओरिजिन ऑफ स्पीसिज* में शामिल किए गए थे। विकासवाद के उनके सिद्धांत के अनुसार, केवल वही पौधे और जानवर प्रजनन करने के लिए जीवित रहेंगे जो अपने को पर्यावरण के अनुकूल सबसे उत्तम तरीके

से ढाल लेते हैं। लेकिन जो पर्यावरण में अपर्याप्त रूप से अनुकूलित थे वे प्रजनन के लिए जीवित नहीं रहेंगे। उन्होंने यह भी स्पष्टीकरण दिया कि विभिन्न प्रजातियों के पौधे और जानवर अलग क्यों दिखते हैं? उन्होंने सुझाव दिया कि मानव का नैतिक स्वभाव और धर्म प्राकृतिक रूप से विकसित हुए हैं। डार्विन की रचना का समकालीन धार्मिक दर्शन पर बहुत प्रभाव पड़ा और अनेक लोगों ने उनके विकास के विचार को स्वीकार नहीं किया क्योंकि इसका उनका धार्मिक विश्वास के साथ टकराव था।

अलबर्ट आइन्सटीन जिन्हें आधुनिक भौतिकी का अग्रदूत माना जाता है, ने सापेक्षता के विशिष्ट और सामान्य सिद्धांतों को विकसित किया। उनके सापेक्षता के सिद्धांत और परमात्रा भौतिकी पर कार्य ने आधुनिक भौतिकी की नींव रखी। 1921 में उन्होंने भौतिक के लिए नोबेल पुरस्कार जीता। सापेक्षता के उनके सिद्धांत ने यह व्याख्या की कि गुरुत्वाकर्षण बल कैसे काम करते हैं। और यह सूर्य के चारों और ग्रहों की कक्षाओं की आइजेक न्यूटन की भविष्यवाणी की तुलना में अधिक सटीक था। भौतिक विज्ञान में अग्रणी शोध पत्रों के माध्यम से संक्षेप में उनका महत्वपूर्ण योगदान इस प्रकार हैः

'एक ने तरल में अणुओं के आकार को मापने का तरीका स्पष्ट किया, दूसरे ने उनकी गति को निर्धारित करने का तरीका बताया और एक तीसरे ने बताया कैसे प्रकाश फोटोन नाम के छोटे पार्सल में आता है - परमात्रा भौतिकी की नींव और विचार जिसने अन्ततः उन्हें नोबेल पुरस्कार दिलवाया। एक चौथे पर्चे ने विशिष्ट सापेक्षता से परिचय करवाया जिसने भौतिकविदों को समय और स्थान की उस अवधारणा पर पुनर्विचार करने के लिए विवश किया जो सभ्यता की शुरूआत से पर्याप्त रहे थे। फिर, कुछ महीने बाद, लगभग एक बाद के विचार के रूप में आइंस्टीन ने पाँचवे शोध पत्र में बताया कि पदार्थ और ऊर्जा, विशेष रूप से परमाणु स्तर पर अन्तः परिवर्तनीय हो सकते हैं और E=mc2, परमाणु ऊर्जा का वैज्ञानिक आधार और इतिहास में सबसे गणितीय समीकरण दिया'। (स्रोत : htpps;//www.smithsonianmag.com)

लुई पाश्चर एक जीवविज्ञानी, सूक्ष्म जीवविज्ञानी और रसायनशास्त्री थे जिनकी विज्ञान के क्षेत्र में खोजों का हमारे रोजमर्रा के जीवन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। सूक्ष्म जीवाणु किण्वन के सिद्धान्तों की उनकी खोज ने खाद्य-सुरक्षा की विधि प्रदान की। उन्होंने दिखाया कि संदुषण के बिना, सूक्ष्म जीव विकसित नहीं हो सकते हैं और ऊष्णता संबंधी प्रसंस्करण अवांछित सूक्ष्म जीवों को निष्क्रिय कर देगा। उन्होंने पाया कि अवांछित सूक्षम जीवों को शराब को गर्म करके नष्ट किया जा सकता है। और फिर इस सिद्धान्त का उपयोग सभी खराब होने वाली वस्तुओं में किया जाता है। इस पद्धति को बाद में पाश्चराइजेशन के रूप में लोकप्रिय बनाया गया। उन्होंने साबित किया कि रोगाणु स्वस्थ रेशम कीट के अंडों पर हमला करते थे जिससे रोग पैदा होते हैं, जिन्हें रोगाणुओं को समाप्त करने पर नियंत्रित किया जा सकता है। इसके परिणामस्वरूप एक वैक्सीन का विकास हुआ जिसने फ्रांस के रेशम उद्योग को बचाया। उन्हें मुर्गी के हैजे और एंथरेक्स के लिए टीकों की खोज का श्रेय भी दिया जाता है। जो मनुष्यों और जानवरों के लिए फायदेमंद साबित होता है। उन्हें प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्र में कई अन्य अभूतपूर्व विचारों का वास्तुकार माना जाता है। रोगाणु सिद्धांत के उनके आविष्कार ने औषधि के क्षेत्र में क्रांति ला दी और आज भी संक्रमण शल्य चिकित्सा का एक अनिवार्य घटक है।

मेरी क्यूरी एक महान महिला वैज्ञानिक थी और उनसे पहले व्यवसायिक विज्ञान पर पुरुषों का वर्चस्व था। उन्हें रेडियम और पोलोनियम की खोज के लिए याद किया जाता है। उन्होंने अपने पति पियरे क्यूरी के साथ रेडियोधर्मिता के क्षेत्र में काम किया। 1895 में

विल्हेम रोटजन की एक्सरे की खोज और 1896 में यूरेनियम लवण द्वारा उत्पादित किरणों में हेनरी बेकरेल के शोध से प्रेरित होकर मेरी ने पोलोनियम और रेडियम के नये रासायनिक तत्त्वों की खोज की। 1903 में मेरी पियरे और बेकरेल को रेडियोधर्मिता में अपने कार्य के लिए भौतिकी में नोबेल पुरस्कार मिला। 1911 में मेरी को रसायनविज्ञान के क्षेत्र में रेडियम को अलग करने के लिए दूसरे नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनके शोध कार्य से कैंसर के उपचार को अत्यधिक लाभ हुआ। उन्हें यह प्रक्रिया शुरू करने का श्रेय दिया जाता है कि परमाणु अविभाज्य और अपरिवर्तनीय हैं। उनके वैज्ञानिक योगदान का न केवल भविष्य के अनुसंधान पर अभूतपूर्ण प्रभाव पड़ा, बल्कि उन्होंने यह भी साबित कर दिया कि महिला में वैज्ञानिक ज्ञान को आगे बढ़ाने की क्षमता थी जो बात उनसे पहले अकल्पनीय थी।

अपने शोध कार्यों के माध्यम से उपर वर्णित वैज्ञानिकों के अलावा अनेक अन्य वैज्ञानिकों ने विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में काफी योगदान दिया। उनके योगदान ने एक वैज्ञानिक भावना को विकसित करने में मदद की जिसने भविष्य की पीढ़ियों को मदद की। यहाँ यह समझना महत्वपूर्ण है कि उन्नीसवीं शताब्दी के यूरोप ने प्रतिभाशाली मस्तिष्कों का निर्माण किया और भौतिकी, रसायनविज्ञान, जीवनविज्ञान और चिकित्सा विज्ञान में उनके शोध कार्यों ने हमारे इर्द-गिर्द की दुनियां को समझने के हमारे तरीके को बदल दिया। वैज्ञानिक ज्ञान में विकास हमें वैज्ञानिक पद्धति और वस्तुनिष्ठता के बारे में सीखाता है जो मानव बुद्धि की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है। वैज्ञानिक अनुसंधान और प्रमुख खोजों ने न केवल भौतिक दुनियाँ को समझने और अनेक चिकित्सा समस्याओं को हल करने में मदद की बल्कि बौद्धिक विकास में भी योगदान दिया। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि प्रमुख वैज्ञानिकों के योगदान को समझा जाए जो एक तरह से विज्ञान में क्रांति लाए।

बोध प्रश्न 2

1) सामाजिक वैज्ञानिकों की रचनाओं का संदर्भ देते हुए सामाजिक विज्ञान के विकासों की व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

....

....

2) उन्नीसवीं शताब्दी में वैज्ञानिक शोधों ने नये वैज्ञानिक ज्ञान की शुरूआत को कैसे चिन्हित किया?

....

....

....

....

....

....

15.5 सारांश

इस इकाई में हमने स्पष्ट किया है कि दार्शनिकों, सामाजिक वैज्ञानिकों और वैज्ञानिकों द्वारा किये गये योगदान ने मानव बुद्धि, सामाजिक प्रक्रियाओं और प्राकृतिक विश्व के विभिन्न पहलुओं को समझने में क्रांतिकारी परिवर्तन कैसे लाए। कुछ महान दार्शनिकों और उनकी रचनाओं का विश्लेषण करते हुए हमने तर्कसंगत और वैज्ञानिक ज्ञान के विकास में उनके महत्व पर चर्चा की है। दार्शनिकों ने ईसाई धर्म द्वारा निर्धारित नैतिकता की बेड़ियों से मानव विवेक को मुक्त करने में मदद की। हम मानव समाज और व्यक्तित्व से संबंधित नये सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रश्नों का उद्भव पाते हैं। यह वह अवधि है जिसने बौद्धिक इतिहास में आधुनिकता की शुरुआत को चिन्हित किया है। चाहे सामाजिक विज्ञान हो या विज्ञान महान विचारकों और वैज्ञानिकों ने सामाजिक जीवन और प्राकृतिक विश्व के कई अनसुलझे सवालों के जवाब खोजने के लिए तार्किक रूप से नयी विधियों को व्यक्त किया। सही मायने में आधुनिक यूरोप में बौद्धिक विकास ने वैश्विक स्तर पर यूरोप के वर्चस्व को स्थापित करने में मदद की।

15.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 15.2 देखें।

2) भाग 15.2 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 15.3 देखें।

2) भाग 15.4 देखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY